चत्री कुल में तो सब शामिल हैं और इधर आकर नाता (धरेचा) करने से व आचार में फ़र्क पड़ने से सहभोजन (हम प्याले, निवाले) और रिस्तेदारी में अलहदा २ कई पथक हो गये हैं काठी, बूंदेला बड़ीभारी कौमें हैं वह अपना अलहदा थोक रखते हैं राजपूताना के दरमियान मारवाड़ के पश्चिमी प्रांत और आबू पहाड़ के आसपास नातरायत राजपूतों का एक गिरोह है उसमें कई जात के राजपूत शामिल हैं और उनमें ही रिस्तेदारी होती है और सुध राजपूतों में से कोई की उनमें रिस्तेदारी होजावे वह ख़ारिज होकर नातरायतों में शामिल होजाता है लेकिन नातरायत की दोहीती अच्छे राजपूतों में पहुँच जाती है इसी से यह औखाणां चला आता है कि नातरायत की तीजी पीढ़ी गढ़ चढ़े और यह इकेवड़ा और दोवड़ा रिस्तेदारी का भेद होने से होता है याने भायल, इंदा, मांगलिया नाता नहीं करते मगर नातरायत की लड़की व्याह लाते हैं और उनकी बेटी चहुवाण, भाटी को व्याही जाती है और उनके गढ़पति व्याहते हैं इस तरह चलते २ सायद कोई गढ़पती तक पहुंच जावे और ऐसा ही एक गिरोह मुतसिल मथुरा, आगरा, भरतपुर है जो गोरये ठाकुर के नाम से मशहूर हैं और राजपूताना में कई राजपूत रिस्तेदारी से गिरने, राजपूतों के पास वानियों से रिस्तेदारी करने से विरादरी से ख़ारिज किये गये हैं वो हैं और राजपूतों के चाकरों की राजपूतों वाली ही जातें हैं और वैसा ही लिवास है और उनमें से वतन छोड़कर गैर मुल्क में चले जाते हैं जब चाकर लफ़्ज़ छोड़कर राजपूत कहलाने लगते हैं इन दोनों कोमों का कोई थोक नहीं बँधा है मुतफ़रिक तौर पर हैं और ऐब छिपाने की कोशिश करते हैं और श्रेष्ठ राजपूत उनको दरियाफ़्त से पहिचानते हैं कई राजपूत किसी ख़ास वजहसे पेशेवर कौमों में शामिल होगये हैं उनमें अन्दरूनी जातें राजपूतों वाली हैं मगर अव्वल नाम जिस जात में शामिल हुए हैं उसी का वोला जाता है और राजपूतों से यहां तक कतै ताल्लुक होगया है कि किसी उत्तम जात में शामिल हुए हैं

तो उसके हाथ का पानी पियेंगे और मधम जात में मिले हैं उनका छुवा पानी नहीं पीसकते, राजपूताना में रहनेवाली पेसेवर कौम हिन्दू और सुसलमान में बिराह्मण से लेकर नीच कौम तक कई कौम तो राजपूत से बणी है और कई में राजपूत सामिल हुए हैं बहुत कम कौमों में राजपूत सामिल नहीं हैं राजपूत की किसी कौम की साखा की तफ़सील लिखने के बाद उस कौम के राजपूत लोग जिन जातों में जाकर सामिल हुए हैं उन जातों के नाम लिखे जावें तो फ़हरिस्त बहुत बढ़ जावे इसलिये कोई मशहूर सखस किसी दीगर कौम में गये और उससे कोई जात बणी वह लिखदिये जाते हैं.

वंसविवरण ॥

चत्रियों के सूर्यवंस, चंद्रवंस, बाहुजवंस ब्रह्मा से, मनुवंस, अग्नी-वंस, सुरू में यह वंस हुए फ़िर इनसे ३६ वंस हुये, दोहा—दसरविते, दसचंदते, द्वादस रिसी प्रमाण। चार सुअग्नी होत्रते यह छत्तीस वखान ॥ १ ॥ मिनजुमले इनके जिनका ठीक पता लगता है वह उसके नाम से लिख दिये जाते हैं और जिस वंस साखा का ठीक पता नहीं मि-लता है वह अलहदा लिख दिये जाते हैं जब ठीक पता लगेगा मौके मुनासिब पर दर्ज किया जावेगा.

पुराणों और पुराणी किताबों में इन वंसों का ज़िकर है ॥

सूरजवंस—सूरजवंस, कोसिलवंस, रघुवंस जिसकी साखा गहलोत, कछवाहा, बड़गूजर, राठोड़, विदुखी का वंश, निमीवंस, विदेहवंस, करुष वै वस्त मनूं के का वंस की उत्तर सूर्यवंस साखा.

चंद्रवंस—जदुवंस जिसकी साखा जादव, भाटी विनाफर, जाड़ेचा, सीहोट, समा हहय वंस, हय चीनियों का पहिला राजा, ससविन्दू जि-समें सिसपाल डाहलिया का वंस, उत्तर कुरुवंस.

पुरु का वंस, कुरुवंस, पांडूवंस जिसकी साखा तंवर, कलिया, जादू.

वालीक वंस, अजमीढवंस, पुरुमीढवंस, देवमीढवंस, सुधनूका वंस जिसमें जरासिन्ध हुए, नील को वंस, सुंमभवंस, पांचालवंस.

द्रह का भोजवंस, गान्धारवंस, कलिंजर वंस, पाराड्यवंस, करलवंस, चौलवंस.

अनूके मलेछ, अंगवंस, वंगवंस, कलिंगवंस, ककयवंस, मद्रवंस, अंगराज, रोमपाद अधिरथी करने के पालक पिता का वंस हिन्दू पाये जाते हैं.

तुरवसु का वंस मुसलमान हुआ फिर जवन पती के लावलद फौत होने से उसकी स्त्री के गर्भ से गरग ऋषी से कालयवन हुआ जिसने मलेछवंस बढ़ाया मलेछवंस राजा वेण के शरीर से पैदा हुआ था.

गोड़वंस बंगाल देश का दूसरा नाम गोड़ बंगाला है जिस देश के नामसे जाती का नाम हुआ वंसभास्कर में सायंभू मनु का लिखे.

ऋषीवंसी-पडिहारियावंस भजन ऋषी का जिसमें देवल वगैरह साखा हैं.

अग्नीवंस-सोलंखी (चालुक) वंस, पंवारवंस, चहुवाणवंस, पड़ियारवंस.

जिनके मूलवंस का पता नहीं है गोनरदवंस, सिलारा जाती उरण वगैरह सहरों में रहती थी, बाहुज कश्मीर में थे, रेवतवंस मनूका, विन्दावंस मनूका जो विंवस्थल में थे.

नई किताबों में वंसों से साखा टले बाद

सूरजवंस.

गहलोत २४ साखा, उदैपुर, परतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, साहपुरा की रियासतें.

मेवाड़ में भावनगर, लाठी, गुजराज में.

गहलोत गोह (ग्रहादित्य) सिलादतोत का.

हुल गहलोत मानमोरी के मदत आय उनमें हुल नाम है इससे यह साखा पुराणी पाई जाती है.

गोहिल गहलोत — रावल बापा के ५ बेटों की औलाद का यह नाम हुआ गोहलवाड़ इलाका इस साखा के नाम से कहलाता है भावनगर, लाठी रियासत हैं इस साखा में हस्बज़ेल भेद हैं.

लाठिया गोहिल लाठी ठिकाणे के नाम से.

उर्ना गोहिल.

गोचर गोहिल.

असील गहलोत असील बापावत का सोराष्ट देश में असीलगढ़ ठिकाणों.

नोसेरा पठाण	१३०	रावल बापा गहलोत का १३० बेटा नोसेरा पठाण.
हिन्दू सूरज वंस अग्नी पूजक ९८		९८ अग्नीपूजक हुआ.

मांगलिया गहलोत मंगल खुमांणोत का.

गाटेरा गहलोत भर्तृ भाट खुमांणोत के १३ वें बेटे का.

पीपाड़ा गहलोत पीपाड गांव के नाम से हुआ.

टेवाणा गहलोत.

आसायच गहलोत.

गोदारा जाट गहलोत से — सारसू गाँव के मालिक सारसुत ब्राह्मण अपना जजमान बनाने के लिये गहलोत रईस का पंगला लड़का मांगकर गोदी में लाये जिसको गोदला कहते उसकी नसल गोदारा.

कुंभकरण, समरसिंहोत दिखण में विदोर के नजदीक जाकर आबाद

गोरखा------ गोरखा, नैपाल रावल समरसी का बेटा जाकर आ-
वाद हुआ जिसके

श्रीवानिया श्रीवान करण समर सिंहोत का बनिया होगया.

आहड़ा — आहड़ में राज रहने से कहलाया, पेश्तर का रावल खिताब और कौम का आहड़ा नाम माहप करण समर सिंहोत की बागड़ में डूंगरपुर रियासत बधी उसके रहा.

सीसोदिया राहपजी से सीसोदा गांव में राज रहने से कहलाया.

चंद्रावत सीसोदिया — चंद्रराज का राहपजी से लिखमणसिंघ ६ वीं पुस्त में हैं उसके दरमियान भानसिंघ के दूसरे बेटे चंद्रराज ने रामपुर, भानपुर आबाद किया.

मरैटा सजन अजैसिंघ लिखमणसिंघोत का सिवराज इस साखा में हुआ.

कानावत सीसोदिया.

सारंगदे सीसोदिया राणा लाखाजी का वंश.

भाखरोत सीसोदिया.

राणांवत — राहप, भरत, सुरजमलोत रावल समरसी के भाई सूरज-मल के पोते ने राणां खिताब मंडोवर के मोकल पडिहार से लिये जिसका खानदान राणांवत कहलाया.

दूलावत सीसोदिया दूलै लाखावत का अरवली में अगूणां पानोर के पास,

चूंडावत सीसोदिया चूंडे लाखावत का इनकी १० साखा हैं.

सांगावत सीसोदिया.

किसोरसिंहोत सीसोदिया.

मेघावत सीसोदिया.

जगावत सीसोदिया पतोजी इस खांप में हुआ.

क्रिसनावत सीसोदिया.

लूंणावत सीसोदिया लूंणे लाखावत का अरवली में.

कानोर के सांयग देवल लाखाजी के वंस छपन के निकट.

सोडवार के सांवंत सिन्धूनद के किनारे वाले लाखाजी का वंस.

कूंभावत कूंभाजीका राणां राजपाहड की तलेटी में कास्तकार.

भोसला वणवीर पृथीराजोत राणां रायमलजी के खवास वाल पोते का नागपुर.

सगतावत सगतसिंह महाराणां उदैसिंघजी के का इन की ६ खांप हैं.

जगमालवत जगमाल उदैसिंघोत का.

...गाउत अगर उदैसिंघोत का.

... सगर उदैसिंघोत का सगरजी का बेटा मोहबतखां मुस-...हुआ.

...वत पंचायन उदैसिंघोत का—

गोध... गन उदैसिंघोत का.

मग...त कन उदैसिंघोत का.

भी...रनवत लूनकरन उदैसिंघोत का.

कम...वत टाटराजस्थान में उदैसिंघजी के खानदान में लिखे.

को...नवत टाटराजस्थान में अमरसिंघजी के चचा लिखे.

से...रजमलजी का वंस महाराणां अमरसिंघजी का साहपुरे.

सहावत धमोतर
रणमलोत कल्याणपर
खानावत रायपर अम्बे रामा
} परतापगढ़ में कोण खांप से हैं.

कलूम
गहोर
धोरानिया

कुंभा
गोरासा
वादला
श्रीनकोतक
टेचा
आरह
ऊहर
उसेवा
नीररुप १६
नंदोरिया
नधोता
ओजकरा
कुतचरा
दुसाद
वटेवरा
पाहा
पूरोत २४

वकाया राजपूताना में २४ साखा लिखी उनमें आहड़ा[१] डूंगरपुर में, मागलिया[२] जंगल में, सीसोदिया[३] मेवाड़ में, पीपाड़ा[४] मारवाड़ में लिखे जिनकी साखें ऊपर लिखी गई, नीररुप[१६] तक थोड़े थोड़े हैं जादातर गैरमालूम, पूरोत[२४] तक अनकरीब माअदूम लिखे.

कछवाहा जमवायमात, रियासत जैपुर, अलवर, लावा.

१ सोढदेवजी वांनी रियासत आंमेर.

वीकलपोता वीकलजी का.

३ काकिलजी

कुंडल का कछावा गांव के नाम से झांमावत कछावा अलगोजी का.
रोलणोत रालणजी का राजा जयसिंघजी पोथ्या में से दूर किया.
देलण पोता डांगी कछावा यह खानदान झाडखंड वैजनाथजी के पास है.

७ मलैसीजी

जैतल पोता जैतलजी का.

टाक दरजी, छीपा तोला का रावत बनियां, बाघा का डोइ गूजर भांण के निठार बालजाट नरसी के सोली सुनार } रतन के आंमेरा नाई } रतन के	मलैसीजी के ३२ बेटों में से मुन्दरजे विरकट की नसल पेशवर जातों में सामिल हुई.

८ राजदेवजी

भोजराज पोता भोजराजजी के इनमें १२ तिड़ हैं.

गढका कछावा.

बांवी का कछावा गटका में.

चीतोड़ी का कछावा.

बीकावत कछावा.

रायधरका.

सांवतसी पोता.

सोमेसर पोता सोमेसरजी का इनकी हस्बजेल तिड़ हैं.

भारे पोता.

राणांवत.

कपूर का कछावा बीकसी का इनकी हस्बजेल तिड़ हैं.

बीकसी पोता बीकसी का.

काधेडा का कछावा.

सीहांण का सीहाजी का.

खंगियावत कछावा } वालाजी का कहीं पालोजी के लिखे, महाराज सवाई जयसिंहजी के वक्त में टल्या.

दसरत पोता जसोरजी (जसरैजी) का जसरै पोता भी इनको कहते हैं.

वीकावत कछावा वीकाजी का.

सांवत सी पोता
खीचावत
} बड़ी वंसावली में यह तिड़ें राजधर कोमें लिखी हैं.

राजधर का राजधरजी का.

१० कील्हणदेवजी

धीरावत कछावा खींवराजजी का.

जसवंत कछावा जसराजजी का.

११ कूंतलजी

हमीर देका
गोगावत
} हमीरजी का.

{ भाखरोत कछावा भड़सीजी का दूसरी वंसावली में तो हणराव का लिखे तिड़ें.

कीतावत कछावा

टोंगा

सरवण पोता

सूजे पोता

जोगी कछावा आलणसीजी का

नापावत कछावा जैतमालजी का.

मेव { मोहण, राजो, भोजो, वांछो, वलिवड, जोहण, गोपाल } कूंतलजी के १३ बेटों में से ७ बेटे मुन्दरजै विरकट नीलगाँव के धोका में केरडी मारवा के अपराध में मेव होगया इन्दोर के खानज़ादों के सादी की.

१२ जोणसीजी

कूंभाणी कूंभाजी का.

सिधादे का कछावा सिधैजी का, दूसरी वंसावली में नाम सांगोजी लिखा.

१३ उदैकरणजी

(वालैजी उदैकरणोत का)

वालैपोता खीवराज वालावत का.

करणावत करथजी वालावत का.

कूमावत नूमन करथजी के बेटे का.

मोकावत मोकेजी वालावत का.

(सेखावत मोकलजी वालावत के बेटे सेखाजी का परवार)

टकणेत रतनजी सेखावत का.

रतनावत दुरगा का.

खेजडोलिया वाघजी का गांव खेजडोली से नाम पड़ा.

मिलकपुरिया कूभाजी भारूजी का.

सेखाजी के ७ बेटों की नसल पूरब में, साखा का नाम क्या है तहकीक करो.

सांवलदासजी का सेखावत, यह साखा कहां से चली है तहकीक करो.

(सूजैराय मलोत सेखाजी के पोते का)

लूणकरणजी का लूणकरणजी सूजावत का अमरसर मनोरपुर.

गोपालजी का गोपालजी सूजावत का.

भैरूंजी का भैरूंजी सूजावत का.

चांदावत चांदेजी सूजावत का.

(राय सलजी सूजावत का)

गिरधरजी का गिरधरजी राय सलोत का.

भोजराजजी का { भोजराजजी राय सलोत का इसमें सादूलसिंघ जगरांमोत से और उसके बेटों से साखा फटी सलधीजी सादूलसिंघ के भाई की साखा फटी.

सादूलसिंघजी का सादूलसिंघ, जगरांमोत का इसके बेटों से ५ साखा फटीं.

जोरावरसिंघजी का.

किसनसिंघजी का.

नोलसिंहजी का.

केसरीसिंघजी का.

पाहडसिंघजी का, यह किसनसिंघ का बेटा मालूम देता है.

सलैधी का सलैधीजी जगरांमोत का.

तिरमलजी का रावजी का { तिरमलजी राय सलोत का, तिरमलजी को राव का खिताब था इस वजा से रावजी का कहलाया.

लाडखांनी लाडखांनजी राय सलोत के.

ताजखांनी ताजखांनजी राय सलोत के.

हररामजी का हररामजी राय सलोत के.

परसरामजी का परसरामजी राय सलोत के.

नरू का नरूजी, महाराज, वरसंग, उदैकरणोत का, महराज नाम वकाया राजपूताना में लिखा है.

स्योब्रम पोता स्योब्रमजी उदैकरणोत का.

पथिल पोता पीथलजी उदैकरणोत का.

पातल पोता पातलजी उदैकरणोत का.

सांमोत का कछावा नापोजी उदैकरणोत का,

१५ वणवीरजी

हरजी का वणवीर पोता हरजी का

वणवीर पोता रावनरा वणवीरोतका.

वरै पोता वरैजी वणवीरोत का.

वीरम पोता वीरमजी वणवीरोत का.

मेंगल पोता मेंगलजी वणवीरोत का "सेखावतों में" इतनी इवारत ज्यादे है.

१७ चंद्रसेणजी

कूंभावत कूंभैजी चन्द्रसेणोत का.

१८ पृथीराजजी बारा कोटड़ी इनके बेटों से बंधी.

पचाणोत पचाणजी पृथीराजोत का.

नाथावत गोपालजी पृथीराजोत के बेटे नाथजी का.

सुलतांणोत सुलतांणजी पृथीराजोत का.

खंगारोत जगमालजी पृथीराजोत के बेटे खंगारजी का.

बलभद्रोत बलभद्र पृथीराजोत का.

चत्रभुजोत चत्रभुजजी पृथीराजोत का.

पूरणमलोत पूरणमलजी पृथीराजोत के, यह १९ वें राजा हुए थे.

परताप पोता परतापजी पृथीराजोत का.

रामसिंगोत रामसिंगजी पृथीराजोत का.

किल्याणोत किल्याणजी पृथीराजोत का.

रूपसिंघ का रूपसिंघजी पृथीराजोत का, यह वैरागी भेष अजमेर की तरफ़ रहे.

सांइदासोत सांइदासजी पृथीराजोत का.

नरवर राजवंस भींवजी पृथीराजोत का बेटा आसकरणजी नरवर गया.

२३ भारमलजी

वांकावत भगवानदासजी भारमलोत का, इनको वांका कछवाहा का खि़ताब था.

सलैधी का राजावत सलैधीसिंघजी भारमलोत का.

जगनाथोत जगन्नाथजी भारमलोत का.

सूरदासोत सूरदासजी भारमलोत का.

सादूल पोता सादूलजी भारमलोत का.

२४ भगवतदासजी

माधांणी माधोसिंघजी भगवतदासोत का.

सूरसिंघोत सूरसिंघजी भगवतदासोत का.

वनमाली दासोत वनमालीदासजी भगवतदासोत का.

२५ मानसिंघजी

मानसिंघोत राजावत सकतसिंघजी मानसिंघोत का ठिकांणे पाडे.

दुरजनसिंघोत दुरजनसिंघजी मानसिंघोत का ठिकांणे गोहंदी, गोध.

किलाणसिंघोत किलाणसिंहजी मानसिंघोत का ठिकांणे चंदलाइ.

मानसिंघोत राजावत { जूझारसिंघजी जगतसिंघजी मानसिंघोत के वेटा ठिकांणे झलाय बैठा उनका वेटा सिरदारसिंघजी झलाय, पृथीसिंघजी खिरणी, अनोपसिंघजी सुनारे बैठा.

हिमतसिंघजी का हिमतसिंघजी मानसिंघोत का ठिकांणे रांणोली.

२७ जयसिंघजी बड़ा

कीरतसिंघजी का कीरतसिंघजी जयसिंघोत कांमां बैठा.

हस्बजेल खांप कछवाहा कहां से निकली पता लगाकर मौके पर दरज कीजावे ॥

उगरावत.

उगरसेणजी का.

सरवंगी.

जीतावत.

सूरा.

डोगर कसमीर का.

हाडी का.

भीम पोता लुप्त.

मेलका.

बडगूजर—सूरजवंस, महाराज रामचन्द्रजी के वेटे लव की संतान. बडगूज़र.

राठोड़—जुजरवेद, माध्यन्दिनी साखा, गोतम गोत्राचारिय, सुक्राचारय गुरू, पंखनी देवी जिसका विधवासनी, राष्टसेन्या, राटेश्वरी, नागाणेची, भी नाम है ३ प्रवर मरूपाट, विरदरणवंका, जोधपुर, बीकानेर, किसनगढ़, ईडर, रतलाम, आमझरो, सलाणा, सीतामऊ, झाबवा, कुसलगढ़, वागली, जिला,मा, लाणी, अजमेरा वगैरह ठिकाणे दानेसरा के सिवराजपुर, चंदेलों का ठिकाणा अजोध्या छूटने पर दिखण उड़ीसा में रहे नेनपाल ने संवत् ५२६ में कनोज लिया.

राजा श्रीपुंजक—१३ वेटों से हस्वजेल साखा हुई.

धनेसरा (दानेसरा) धरमविभका.

अभैपुरा भानोद अभैपुर सहर आबाद किया, जिससे नाम हुआ.

कपोलिया वीरचंद का दखण में गया.

कोराह अमरविजै का कोराह सहर आवाद करणे से नाम हुआ.

जलखेडिया सजनविनोद का.

वोजिलाना पद्म का वोजिलाना सहर फतै करने से नाम पड़ा.

अहर अहर का.

पारक वरदेव का पारक सहर आवाद करने से ऐसा नाम पाया.

चंदेल उग्रप्रभो का दिखण फतै किया.

बीर मुकटमणि का.

वरिया भरथ का.

खैरूंदा अनकल का खैरूंदा सहर आवाद करने से ऐसा नाम पाया.

तारापुर (तेहरा) वघलाना } चांद का तारापुर तेहरा वघलाना सहर आवाद करने से ऐसा नाम

सिनजुमलै इनके धरम विंभ के दानेसरा उग्रप्रभो के चंदेल दोय साखा के राठौड़ पाये जाते हैं दानेसरा साखा के महाराज जयचंदजी के साहवदीन से संवत् १२५० में लड़ाई होकर कन्नौज छूटा उसके वाद जयचन्दजी का पड़पोता सीहाजी करीब संवत् १२६८ मारवाड़ में आया उनके खानदान की हस्वजेल साखें हैं.

१ सीहाजी—वानी रयासत मारवाड़.

इडरेचा सोनगजी का इडर में राज करणे से नाम हुआ, टाट राजस्थान में हतूंडिया लिखा.

वाढेल अजका, टाटराजस्थान वंसभास्कर के खिलाफ भाट कात्रा लिखै.

२ आसथानजी

उहड उहडजी जोपसाह आसथानोत का जोपसाह आसथानजी का दूसरा वेटा.

सींधल सींधलजी जोपसाहजी के बड़े बेटे का.
वगार ढोली सींधल खानदान में से हुवे.

धांधल धांधलजी आसथानोत का.

पेथड़ पीथलजी का.

चाचिक चाचिकजी का.

३ धूहडजी

धूहडिया.

४ रायपालजी

रायपालोत रायपालजी का.

डांगी डांगीजी रायपालोत का राजपूत थे जब कि औलाद राजपूत है जमीन ही है.
डांगीढोली डांगीजी ढोलण परणी उसके.

मोहनिया मोहनजी राय पालोत का बेटे भीम का जो भटियानी का वेटा था.

मूंणोत मोहनजी रायपालोत ओसवाली ब्याही उसके बेटे संपटसेन का ओसवाल.

सूंडी सूंडाजी रायपालोत का.

७ छाडाजी

खोखर खोखरजी का.

वानर वानरजी का.

सीमालोत सीमालजी का.

८ तीडोजी

उदावत वेठवासिया — सवली सीसोदणीरे बेटे का नडदेरे बेटे त्रिभ-वणसीरे बेटे उदा का वेठवासे गाँव के नाम से वेठवासिय कहलावे, सरदार के साथ हुक्का नहीं पीते.

११ सलखाजी तीडावत—सलखावत, महेवे, राडदडे.

जुजाणिया जैतमालजी सलखाजी के दूसरे बेटे की औलाद में.

जेतमालोत जैतमालजी सलखावत का.

धवेचा जैतमालजी का धवेचा गाँव में रहणे से ऐसा नाम हुआ.

सोड सोवतजी सलखावत का.

सूडा सोवत (सोभितजी) सलखावत का.

१२ मल्लीनाथजी मालावत जिला मालाणी.

गांगरिया जगमालजी मल्लीनाथोत की औलाद.

उजरड जगमालजी मल्लीनाथोत का.

कोटडिया मंडलीक जगमाल मालावत कैरा गाँव कोटडे में रहने से यह नाम हुआ.

महेचा मेहाजी मल्लीनाथोत की औलाद.

खावडिया मल्लीनाथजी का.

वीरमदेजी सलखावत का वीरमोत.

गोगादे गोगादेजी वीरमदेवोत का.

चाडदे चाडदे वीरमदेजी के बड़े बेटे देवराजजी का बेटा का.

देवराजोत देवराजजी वीरमदेजी के बड़े बेटे का.

विजावत विजाजी वीरमदेवोत का सेतरावे, सिवाने, देछू.

जेसींगोत जेसींगजी वीरमदेवोतका.

१३ चूंडाजी वीरमदेजी का

सतावत सताजी चूंडावत का.

भीवोत भीवजी चूंडाजी के ६ छठा बेटाका.

रणधीरोत रणधीरजी चूंडावतका.

अड़मालोत अड़कमलजी चूंडावत का.

परसरामजी की औलाद में { हांगरी के भोमिया ज़िला अजमेर में, चूंडाजी का बेटा में परसरामजी नाम नहीं है तहकीक करना.

१६ रिडमलजी चूंडावत

भदावत रिडमलजी के वड़े बेटे अखेराज, के वड़ा बेटा पंचायण, के वड़ा बेटा भदाका.

जैतावत रिडमलजी के बेटे अखेराज के बेटे पंचायण के दूसरे बेटे जैताजी का.

कूंपावत रिडमलजी के बेटे अखेराज के दूसरे बेटे महाराज के बेटे कूंपाजी का.

कलावत रिडमलजी के बेटे अखेराज के बेटे रावल के पोता कलाजी का.

रांणावत रिडमलजी के बेटे अखेराजजी के ४ चौथा बेटा रांणांका.

अखेराजजी की औलाद अजमेरा में खोडान बुवानी के भोमिया.

कांधलोत कांधलजी रिडमलजी के ३ तीसरे बेटे का इनमें खांपें फटीं.

वणीरोत वणीरजी, वाघजी, कांधलोत का.

रावतोत — राजसी कांधलोत का, राजसी के किसनसिंघ और किसनसिंघ के उदैसिंघ हुए जिनके दोय बेटों से २ साख हुई, कांधलजी को रावत का खिताब था, वो राजसिंघ को मिला जिससे रावतोत कहलाए.

गोपालदासोत रावतोत गोपालदास के.

राघोदासोत रावतोत राघोदासके.

सांइदासोत सांइदास खेतसी अरडकमल कांधलोतका.

अडमालोत — बाघजी का खानदान पूरब में है अडमालोत प्रसिद्ध है या वरज़ांगोत यह दरियाफ़ करना.

बरसीरोतसे अडमालोततक कांधलोतकी साखा

चांपावत चांपाजी रिडमलजी के ४ चौथा बेटाका.

लाखावत लाखाजी रिडमलजी के ६ छठा बेटाका.

मांडणोत मांडणजी रिडमलजी के ७ सातवें बेटेका.

रूपावत रूपैजी रिडमलजी के ८ आठवें बेटेका.

पातावत पाताजी रिडमलजी के ९ नवें बेटेका.

करणोत करणजी रिडमलजी के १० वें बेटेका.

पूनावत — पूनाजी रिडमलजी के १४ वें बेटे का, पूनाजी का नाम वंसावली और टाटराजस्थान में नहीं है जोधपुर की रिपोर्ट में खांपा कैनकसे में है दरयाफ़ तलब.

मंडलावत मंडलाजी रिडमजीके १५ वें बेटेका.

नाथोत — नाथूजी रिडमलजीके २१ वें बेटेका.
नारणोत — बोसूरी के नारणोत नाथूजी के लिखे हैं जो कैसा है.

वाला रिडमलजी के २३ वें बेटे भाखरसी के बेटे वालाका.

जैतमालोत जैतमाल रिडमलोतका.	१२	टाटराजस्थान में लिखे
डूंगरोत डूंगरसी रिडमलोतका	५	
सांडावत सांडाजी रिडमलोतका	१४	
वीरोवत वीरोजी रिडमलोतका	१३	
जगमालोत जगमालजी रिडमलोतका	११	

हापवत हापेजी रिडमलोतका.	२२	हैं मगर खांप अणसहदी हैं दरयाफ्त तलब.
अडवालोत अडवालजी रिडमलोतका	१९	
तेजमालोत तेजसी रिड़मलोतका	१८	

सक्तावत सकतसि.	वणवीर	यह ४ खांपें और खांप चलानेवालों के नाम टाट राजस्थान में लिखे हैं मगर वंसावली में नाम दूसरी विरकट में हैं वो लिखे हैं और खांप भी मशहूर नहीं है दरयाफ्त तलब.
करमचंदोत करमचंद.	गोयंद	
खेतसियोत खेतसी.	उधोदास	
सत्रुसालोत सत्रुसाल.	सादा	

१७ जोधाजी

जोधा.

रतनोत जोधा.

अभैराजोत जोधा.

वरसिंहोत वरसिंघजी जोधावतका नोती, नोलाइ.

भारमलोत भारमलजी जोधावतका वीलारा.

सिवराजोत सिवराजजी जोधावतका दूनारा.

रायपालोत रायपालजी जोधावत ११ वें बेटेका.

करमसिंहोत करमसीजी जोधावत का १० वां बेटा इसमें २ भेद करमसीजी के बेटों से हुए.

वडोडा करमसोत

छोटोडा करमसोत

सांवतसिंहोत सांवतसीजी जोधावतका द्वारो.

(सूजैजी जोधावत का, सूजाजी जोधपुर १९ वें पाटराजा हुए)

उदावत उदैजी सूजावतका जोधे पोता उदावत कहलाते हैं.

नरावत जोधा नरैजी सूजावत का.

सांगावत सांगाजी सूजावतका, स्वतन्त्र नगर वरोह (वरवह) में टाटराजस्थान में लिखा.

पिरागदासोत पिरागदास सूजावत का.

देइदासजीका — गागरनी खीचीवाडा में, वंसभास्कर में देइदास जोधावत लिखा है मगर जोधाजी के वेटों में देइदास नाम नहीं है.

(दूदैजी जोधावत का)

मेडतिया दूदैजी जोधावत के, मेडता सहर का मालिक रहने से मेडतिया कहलाया,

वरसंगजी का वरसंगजी वीरमदे दूदावत का.

चांदावत चांदाजी वीरमदे दूदावत का.

जगमालोत मेडतिया जगमालजी वीरमदे दूदावत का.

जयमलोत मेडतिया जयमलजी, वीरमदे दूदावत का.

इसरजी का इसरजी वीरमदे दूदावत का.

[१] मेडतिया की शाखा

(वीकैजी जोधावत का) यानी रयासत वीकानेर का (वीका)

घडसियोत घडसीजी वीकावत का,

राजसिंघोत राजसीजी वीकावत का.

मेघराजोत मेघराजजी वीकावत का.

अमरावत अमरा के लगोतका, वीसावत वीसाजी का — यह दोनों खांपें सरदार के साथ हुका नहीं पीते.

(लूंणकरणजी वीकावत का)

रतनसिंघोत रतनसिंघजी का.

परतापसिंघोत परतापसिंघजी का मसांणिया वीका.

नारणोत नारण, वैरसी, लूणकरणोत का, इनमें साखा वेटों से हुई.

वलभद्रोत वलभद्र का.

भोपतोत भोपत का.

जैमलोत जैमल का.

तेजसिंघोत तेजसिंघजी का.

नींवावत नींबैजी का.

सूरजमलोत सूरजमल का.

करमसियोत करमसी का कीरतसिंघ करमसिंघोत का कीरतसिंघोत.

नेतसीयोत	नेतसी का	बकाया राजपूताना में लिखे हैं. राय साहब मुंसी सोहनलाल रायसियोत को रामावत समझे हैं,
किसनावत	किसनजी का	
रामसियोत	रामसी के	
रूपसियोत	रूपसी के	
कुसलसियोत	कुसलसी के	

(जैतसीजी लूणकरणोत का)

भींवराजोत भींवराजजी का गड़ भोम का बाहरू यह खिताब हैं,

सिरंगोत सिरंगजी का.

वाघावत वाघाजी ठाकरसी जैतसिंघोत का सैघांणै,

माधोदासोत माधोदासजी का, गाँव पारवा में यह किसकी औलाद में से हैं.

भोजराजोत	भोजराज का	बकाया राजपूताना में लिखे हैं.
मालदेवोत	मालदेव का	
कानावत	कानजी का	
फूलमलोत	फूलमल का	
सूरजनोत	सुरजन का	
मानसिंघोत	मानसिंघ का	
अचलावत	अचल का	
करमचंदोत	करमचंद का	
तेलोसियोत	तेलूसी का	
सीधावत	सिध का	

(किसनसिंजी जतसिंघोत का)

अमरसिंघोत अमरसिंघजी का.

पृथीराजोत पृथीराजजी का.

रामावत रामसिंघजी का.

डूंगरोत डूंगरसिंघजी का भिनावत भीमजी का सुलतानोत सुलतान का भाकरोत भाकरसी का राघोदासोत राघोदास का गोपालदासोत गोपालदास का सारंगोत सारंग का	बकाया राजपूताना में लिखे हैं.

(रायसिंघजी का)

किसनसिंघोत किसनसिंघजी का.

(अनोपसिंघजी का)

अणदसिंघोत अणदसिंघजी का, इनमें ३ खांपें बेटों से हुई.

अमरसिंघजी का अमरसिंघ अणदसिंघोत का.

तारासिंघजी का तारासिंघजी अणदसिंघोत का.

गूदडसिंघजी का गूदडसिंघजी अणदसिंघोत का.

(गजसिंघजी अणदसिंघोत का)

गजसिंघोत राजवी महाराज गजसिंघजी का, इनमें हस्वजेल घराणें हैं.

छतरसिंघजी का डोढ़ी का राजवी.

सुलतानसिंघ का वणीसर आलसर.

देवीसिंघजी का बडी हवेली.

जयसिंघ, राजसिंघ, गजसिंघोत का सीकर.

मोहकमसिंघ का मारवाड़ में गाँव जांभे.

ठाकुर सियोतवीका, यह खांप कहां से निकली दरयाफ्त करना.

(वीदैजी जोधावत का वीदावत)

उदैकरणोत उदैकरणजी वीदावत का.

हरावत हरैजी वीदावत का.

भीवराजोत भीवराजजी वीदावत का.

डूंगरसिंघोत उरफ फूलाणी डूंगरसीजी वीदावत का.

भोजराजोत भोजराज वीदावत का.

(संसारचंदजी वीदावत का)

जालपदासोत जालपदास सूरावत का.

खंगारोत खंगारजी जालपदास सूरावत का, इनमें २ खांपें जुदा नाम पाया.

किसनदासोत किसनदास खंगारोत का.

मानसिंघोत मानसिंघ, स्यामसिंघ उदैसिंघ किसनदासोत का.

मदनावत मदन पातावत का.

(सांगाजी संसारचंदोत का)

रामदासोत रामदासजी का.

सांवलदासोत सांवलदासजी का.

दयालदासोत दयालदास हाफा सांगावत का.

धनावत रिडमल सांगावतका.

सीहावत सीहै सांगावतका.

(गोपालदासजी सांगावत का)

पृथीराजोत पृथीराज, जसवत गोपालदासोत का.

मनोरदासोत मनोरदास जसवत गोपालदासोत का, इनमें ६ खांपें हैं. बेटों से.

मूणदासोत.

माहोदासोत.

देइदासोत.

जगमालोत.

डूंगरसियोत.
मालदेवजी का. | मनोरदासोतकी साखा

स्यामदासोत स्यामदास जसवत गोपालदासोत का.

तेजसिंहोत तेजसी गोपालदासोत का, इनमें ३ थोक हैं.

चन्द्रभांणोत चन्द्रभांण तेजसींहोत का.

रामचन्दोत रामचन्द तेजसींहोत का.

भागचन्दोत भागचन्द रामचन्दोत तेजसी के पोते का. | तेजसिंहोतकी साखा

केसोदासोत केसोदास गोपालदासोत का, यह साखा ठिकांणे वीदासर की टीकाइ है.

मानसिंघ गोयददासोत का वीदासर चरलै वोथवास.

अचलदास गोयददासोत का वेनाते भोजासर मोटासर दुसारणों वीदासर में आबाद. केसोदासोतकीसाखाबसर ११ मानसिंघ

२१ मालदेवजी, गांगावत, कंवर वाघा, सूजा, जोधावत का.

जोधा रामसिंघ मालदेवोत का ५ वां बेटा केसोदास का चोली महेसर.

जोधा { चंद्रसेण मालदेवोत के २ दूसरे बेटे उग्रसेन के बेटे करमसेन का भणाय इसको विक्रमसेन भी कहते हैं.

केसरीसिंघोत जोधा { कला रायमलोत मालदेवजी के पोता का, वंसभास्कर जिल्द ३ पाने २००४ में सजरा इस तरह लिखा है, जोधाजी रतनसी, रायसिंघ, रायमल, कलो दरयाफ्त करना.

जोधा पृथीराज मालदेवोत का जालोर.

जोधा रतनसी मालदेवोत का भादराजूंण.

जोधा भोजराज मालदेवोत का आहरी.

२५ मोटा राजा उदैसिंघजी मालदेवोत का.

जोधा { भगवानदास उदैसिंघोत के बेटे गोविन्ददास गोयदगढ़ आबाद किया भगवानदास के ३ बेटों की नसल मारवाड़ में रही.

जोधा जैतसिंघ उदैसिंघोत का मेवाडिया जिला अजमेर.

सुजाणसिंघोत जोधा { माधोसिंघ उदैसिंघोत के बेटे केसरीसिंघ का सुजाणसिंघ जिसका खानदान जून्या, पीसांगण, महरूं.

जोधा दलपतसिंघ उदैसिंघोत के महेसदास के बेटे रतनसिंघ रतलाम आबाद किया.

जोधा सकतसिंघ उदैसिंघोत का खरवै.

जोधा किसनसिंघ उदैसिंघोत किसनगढ़ आबाद किया.

जोधा नरहरदास उदैसिंघोत का अरडक, हासियावास वगैरह गाँव जिला अजमेर में.

जोधा { यसवंतसिंघ केसो उदैसिंघ के, पीसांगन आबाद किया मेवाडिया जिला अजमेर में है, मगर बकाया राजपूताना में टाटराजस्थान के खिलाफ़ है कुछ भी नहीं लिखा इसलिये दरयाफ्त तलब है.

जोधा स्यामसिंघ उदैसिंघोत का ओनाडा जिला अजमेर में भोमींया.

मनरूप जोधा { यसवंतसिंघ उदैसिंघोत के बेटे मान का इसने मानपुर आबाद किया मेवाडिया जिला अजमेर में इस्तमुरारदार है.

२७ गजसिंघजी.

जोधा अमरसिंघ गजसिंघोत का सेवा का राव अमरसिंघ को राव का खिताब था.

२८ अजीतसिंघजी.

जोधा आणदसिंघजी अजीतसिंघोत का रईस ईडर अहमदनगर.

हस्बज़ेल खांप राठोड़ कहां से निकली पता लगाकर मौके पर दरज कीजावें ॥

पोकरणा.

सोभावत.

जोलिया (जसोलिया).

हैंसावत.

कोटेचा.

वाहडमेरा.

हतूंडिया २ तराका है.

मारवाड़ में हेवोसीहाजी का खानदान में से.

मेवाड़ में जनानी डोढी के डोढिया ठाकर हैं वो हसती कूंडी के हैं.

रामसिंघ रोटल का खानदान जो मेवाड़ व जैपुर इलाके में था.

रवीपस.

फिटक { जिन में उरजाजी फिटक महाराज अजीतसिंघजी के बखत में नांमी गैर चाकर का खिताब पाये हुए थे.

डूंगी.

मुलू इनकी बेटी मोढी जोधाजी को मजीठ के हलवे की मिजमानी दी थी.

कूंडलिया.

चंद्रावत.

भूपतीवत.

चूंडावत.

रिडमलोत, लाखा रिडमलोत के होंगे.

सांवलेचा जिनमें नीवा सांवलेचा नामी हुआ.

तुलेचा }
सोठार } मुसलमान.

मालावत भदेल रामदेवा आविया जोवसिया जोरा	स्यायद वाढेल होवें. टाटराजस्थान में लिखा है मगर नाम अणसंहद हैं.

चाकित वदरा चजीरा कवरया सूदू महोली मुरसिया	वकाया राजपूताना में लिखे हैं मगर नाम अणसंहदे हैं. स्यायद सूडी हो.

खाखूजी का.

थांथी, थांथी रायपालोत के हैं या दीगर.

चंद्रवंस.

विनाफर.

जदूवंस.

जाडेचा	क्रिसन, प्रदमन (अनुरुध) वज्र, खीर, जाडेच का वंस टाटराजस्थान में अनुरुध का नाम नहीं माना इस साखा में मुल्क कछ में भुज और जामनगर की रयासत हैं.
यदू	क्रिसन, प्रदमन, (अनुरुध) वज्र, खीर, जदभान के वंस में यदूगिरी वीहडनगर के यादव हैं टाटराजस्थान में अनुरुध का नाम नहीं माना.

जादव { क्रिसन, प्रदमन, अनरुध, रुद, वज्रनाभ, क्रतभान का वंस में करोली का राजा तहनपाल ७६ वीं पुस्त में हुआ जिसका जरद निसानह और ४ बेटों की नसल हस्बज़ेल.

धरम पाल के करोली.

तळजादव चांडाल कंवार के.

मदनपाल के भरतपुर बालचंद ८२ पुस्त में थे जिनसे सनसनवाल जाट हुए.

सोनपाल के बिछोर में.

मदेचा
बिदमून
बुदा
सोहा
} जादव की टाटराजस्थान में ८ साखा लिखीं उनमें से ३ ऊपर लिखीं ४ यह लिखीं १ नीचे लिखी.

जादव { क्रिसन, प्रदमन (**अनुरुध**) वज्र (**नाभ**) प्रतवाहू, सुबाहू, रज, गज, सालवाहन के खानदान की बदरीनाथ के पहाड़ में रयासतें कायम हुईं मिनजुमले उनके कई हिन्दू रहे कई मुसलमान हुए, टाटराजस्थान में अनुरुध को नहीं माना अनुवादक ने नाभ को नहीं माना और गज को सांतसेन खयाल किया.

सिहोट खरलीगढ़ सिन्धू नद के किनारे राज करते टाटराजस्थान में जदूकुल की साखा लिखते हैं.

चाकेतामुगल सालवाहन के बालवंद के भूपती के चाकेता के मुसलमान हुए.

अफगान सालवाहन के बेटे बालवन्द के बेटे कलूराव के बेटे मुसलमान हुए.

सांमेजा.

सभामुसलमान सामेजा में से मुसलमान हुए वो बालवन्द के बेटे कला के बेटे समा के.

कलर मुसलमान बालवन्द के बेटे मुसलमान हुए उनमें से कला के.

समावंस { सांमभका सिन्ध में सिकन्दर के बखत में साम्बनामा जाडेचा साम्बनगर मीनगढ़ में था.

जोइया { सालवाहन के बेटे वालवन्द के बेटे झंझ के बेटे जोइया का जिसके हिंदू और मुसलमान दोनों हैं.

{भेसडेच सालवाहन के बेटे बालवन्द के बेटे भेसडेच का, भेसडेच भाटी यही होंगे.

भाटीसालवाहन के बालवन्द के भाटी बड़ा बेटा था जिसका राज्ञ जैसलमेर, माड में.

मंगलराव भाटी का बेटा से

कलोरिया जाट कलरसी का, सायद कुलडिया होवें.

मूंड जाट मूलराज का.

सिवर जाट सिवराज के.

फूलनाइ फूल के, सायद फूलभाटी माइ होवे.

कुभार केवल के.

मसूरराव भाटी का बेटा का

अभोरिया भाटी अभैराव का मुसलमान भटी.

सारण जाट सारण का.

मंडमराव मंगलरावोत का

गोगली गोगली मंडमरावोत का.

लोहा लोहा, मूलराज मंडमरावोत का.

पोड राजपाल, रनू, मूलराज मंडमरावोत का.

{बुध राज़पाल, रनू, मूलराज, मंडमरावोत का इस साखा में से.

रोहड़िया वारट { चंद, मांगा, फमावत, कूंडल के मालिक कोचारनी व्याह कर राव रायपालजी राठौड ने चारन बनाया.

केहर मंडमरावोत का

उतैराव उतैराव का.

चाह चाह का, टाटराजस्थान लिखे वकाया राजपूताना में (चन्तर) लिखे.

खाफरिया खाफरिया का, टाटराजस्थान में लिखे.

आथहीन आथहीन के, बकाया राजपूताना में (थायम) लिखे.

तनूं केहरोत के

माकडसुथार माकड का.

जैतूंग भाटी जैतूंग का.

रैबारी देवसी आलणोत का.

राखेचा ओसवाल राखेच आलणोत का.

रावल देवराज विजेराव तनओत का देवराज से रावल खिताब हुआ.

छैना भाटी छैना का.

रावल वांछू मूंद देवराजोत का

सींघराव सिंह का.

पाहु पाहु वापेरावोत का.

इनय इनय का, टाटराजस्थान के खिलाफ़ दीगर किताब में (अखो) लिखा.

मूलअपसा मूलअपसा का, टाटराजस्थान के खिलाफ़ दीगर किताब में (मूलपसाव).

रावल दुसाद वांछवोत का

राड़ राड़ विजेरावोत का, इस साखा में से कई जाट हुये वो राड़ ज़ाट कहलाते हैं.

रावल जेसलदेव दुसादोत का

पलासिया भाटी { पलासी, हांसू, सालिवांहनोत का वदरीनाथ के पाहड़ों में जादव सालवाहन की एक नसल खतम हुई उसकी रयासत का मालिक हुआ जिसका,

केलण रावल जेसलदेवोत का

जसोड जसहड पालण केलणोत की नसल में दूदा तिलोकसी इस साख में हुए.

सीहाना सीहान, जयचंद केलणोत का.

तेजराव चाचिक केलणोत का

भटी मुसलमान तनू, मरू के अभोरियां भाखा में मिले.	तेजराव के, रावल करणसी के, रावल लाखणसेन के, रावल पुनपाल के, लाखणसी के, राणगदेव के २ बेटे, तनू, मरू (महिर).

रावल केहर, देवराज, रावल मूलराज, रावल जेतसी, तेजरावोत का

सोमभाटी सोम के.

केलणभाटी केलण के, पूगल, देरावर, त्रिकुपर, काराव हुए इसवजेल साखें:—

वरसींग.

खीया.

पूगलिया.

त्रिकूपुरिया.

किसनावत खारवारे.

करनोत जैमलसर.

धनराजोत वीठणोक.

वरसलपुरिया वरसल, चाचिक, केलणोत का.

तेजसियोत तेजसीके, तेजमालोत यही हैं या रावल तेजसी अमरसिंघोत के हैं.

लूणकरण हमीरदेव रावल मूलराजोत का

मालदेवोत मालदेव लूणकरणोत के.

हस्बजेल खांप भाटी कहां से निकली पता लगाकर मौके पर दरज कीजावें ॥

जंभभाटी बालचन्द के बेटों में ऐसा नाम है तहकीक में खयाल रखना.

लाड.

खीर.

जेसा.

हमीरोत.

जेसलमेरिया.

जैतसिंघोत वरसलपुरिया.

रूपसोत (फोजदार)

देरावरिया रणधीर चाचकोतका देरावर जुदा ठिकाणां बंधा था उसी के हैं या क्या

उरजनोत.

अरोरा खत्री भाटियों में से वहसत्रिती करें.

मेर (मोर) भाटियों में से मुसलमान हुये.

रावलोत रावल अमरसिंघ का खानदान है या कोई पेश्तर के भी हैं.

यह साखें चाचिक से पेश्तर की हैं

पुरु का कुरु पांडववंस

तंवर जिसकी साखें.

जाटोडा.

केलोडा.

गुवालेरा.

कलिया.

जाटू.

बल्ल वाहिलक राजा के बेटे सत्यसिन्धू नदी किनारे अरोड सहर आबाद कर वहां रहे.

गोडवंस — बंगाल देश का दूसरा नाम गोड बंगाला है जिसके नाम से जाती का नाम कायम हुआ, राजा पृथीराज चहुवांण के बखत में बछराज गोड राजपूताना में आया गोडों की सिवपुर रयासत अजमेरा में राजगढ़ ठिकाणां है, ५ साखा हैं—वंसभास्कर में सार्यंभू मनू के लिखे हैं, राजा गोपीचंद इनमें हुआ.

गोड जिसकी साखा हस्बजेल.

उनताहर.

सिलहाला.

तूर.

दूसेन.

वोदानो.

ऋषीवंसी.

पडियारिया सांमगोत्र, सुधामाता को पूजते हैं अपने को रघुवंसी भी कहते हैं.

पडियारिया पडियारिय भजनरिसी के बेटे के, इनमें हस्बजेल साखा हैं.

देवल देवल के कूकड कूकड के गूंद गूंदा के भारडिया भीमा के	चाउद के बेटों से यह साखा हुई, देवलों के अलावे साखों में नाता होता है.

अगनी वंसी.

पडिहार — अगनीवंस पुंडरीक गोत्र यजुरवेद माध्यान्दिनी साखा त्रिपरवर विश्नूभगवान् चामुंडादेवी, कहींगा जनमाता भी लिखी है संवत् ६४० का राजा वाहुक का सिलालेख है उसमें हरिश्चन्द्र ब्रामण की नसल लिखी, सांखा १६.

लुल्लरा लुल्लर का राजा अमायक नाड राव से ५ पुस्त पीछे १.

सूराउत सूरा का इनको भट मंडोवरा कहते हैं २.

रांमटा रांमटा ३.

बुधखेलया खीखी के बेटे वुध का पूरव में ४.

इन्दा सोधक के बेटे इन्द का ५ लखणिया ढेढ लाखा इंदा की औलाद.

खोक्खरा खुक्खर का ६.

चन्द्रावत चन्द का ७ इनमें चंद के बेटों से ३ भेद हैं.

किलोलिया किलहण का किलोलिया गाँव आबाद किया.

चन्द्रायण चन्द्र का.

चोहन्ना चुहन का.

धोराणा मालदेव के बेटे महप पोते धोराण का ८.

धान्धिला धार का धन्धिल ९.

सिन्धू का खीर के बेटे सिन्धू १०.

डोराणा डूंगर के बेटे डोराण का ११.

सुवराणा सुवर का. १२

सुन्ध्या दीपसिंघ आदि की नसल सुन्ध्या होकर मालवे में आबाद हुवे १३.

पड़िहार जाति के मीणे गूजरमल के १४ वकाया राजपूताना में सोमना हडरावोत के लिखे.

केसवोत केसवदास से १५.

सोणपालोत सोणपाल के १६.

सिन्धिल टाट राजस्थान में लूणी के किनारे लिखे यह गलती मालूम देती है.

सोलंखी — अगनी वंस आदि पुरस चोलुक भारद्वाज गोत्र सांमवेद (वंसभास्कर में यजुरवेद) माध्यान्दिनी साखा गढ़ लोहकोट निवास सरस्वती नदी कपिलेश्वर देव, त्रिपरवर, करदुमान रिकेश्वर, (किनोज देवी, माहपाल पुत्र) चालक नेची पुजी जाती हैं कहीं खी-

वज माता लिखी साखा १६ रीमा की रियासत राव लूनावाडा.

१०८ महीप राजपटन का राजा

भलासोलखी वीरभानूं का १.

भुराटिया सोलंखी सूरकरण का २ भुरटा भी कहते हैं.

१२० हरनराज पटन का राजा

खुडाना सोलंखी खुडन का ३ बंग देस.

१५० करण पटन का राजा

कटारिया सोलंखी चन्द्रसेन का ४.

१५४ सिधराज जयसिंघ देपटण का राजा

वाघेला वाघ्रराज का ५ रयासत रीमा, बघेलखंड, पीतापुर, थेराद, अदालज.

सरकिया तेजसी का ६ मूंडलपुर दखण में—सूरकी, बकाया राजपूताना में लिखे वो होंगे

सरवहिया मांडण का ७ गिरनार तीर चलाने से नाम हुआ, वाढेल वैरीन को वाढणे से दानी.

वडभीवल जालोर राजरहा फिर वघेरवाल बनिया हुए.

१७२ भोलाराय भीमपाटन का

गेडासोलखी सक्तिकुमार का ८.

वघेलवाल बनिया अरजन के (गूजर, सुन्ती, कतीरे, सुनार, कोकनभील, अग्नी पनोरा, सूद्र हुए).

१९३ संग्रामसिंघ अहडा वेहडा के

देवसूरी के सोलंखी रानिगदे का ९ — गाँव देसूरी मादरेच चहुवाणों से ली जिससे मादरेचा कहाये और रानकिया भी कहते हैं.

खोडेरा खोड १० खोड सहर मालवे देस में है.

वीरपुरा वीरभानूं का ११.

मलरा सोलंखी माल का १२ टोडा में राज रहा, कवतामें भल्लारा लिखा.

१९४ गोयंददास टोडे

भांणगोता भांण कनडोत का १३.

मलहणोत सोलंखी मलण कनडोत का १४.

लाहृड मालवे में जाकर सेधिया से रिस्तेदारी कर उस विरादरी में मिलगये.

खेराडा सोलंखी भीम का १५ भीम खेराड में ज्याभफपुर का मालिक था.

कठवाडा सोलंखी स्याम का १६.

तेजावत सोलंखी तेजसी का १७.

वरवासिया सोलंखी अमरसिंघ वछराजोत का १८ गाँव वरवासी से.

भरसूंडा सोलंखी सूरै वछराजोत का १९ गाँव भरसूंड से.

सलावत सोलंखी सल्लह वछराजोत का २०.

बैंडा सोलंखी धार का २१.

उनियारिया सोलंखी जैतसी का २२ गाँव उनियारा से.

हलावट सोलंखी हलके २३ { गाँव हलावट से हलावट कहलाया, हलावत भी कहे जाते हैं.

छजावत सोलंखी छजराज का २४.

वहला सोलंखी वहल दूदावत का २५ गाँव वघेरे रहा.

१९५ कुंभराज टोडे

मोडावत सोलंखी कीता का २६.

करमावत सोलंखी करमसी का २७.

अभावत सोलंखी अभा का २८.

१९६ कील्हण टोडे

वालणोत सोलंखी वलण, वीरम, नरपालोत का ३१.

दूजा कहलाके सोलंखी हमीर का २९.

टांटावत सोलंखी पिथोरा का ३०.

१९७ रूपाल टोडै

सुरजन पोता सोलंखी सुरजन का ३२.

१९८ सातल टोडै

वणवीर पोता सोलंखी वणवीर का.

अचल पोता सोलंखी अचल का ३४.

१९९ सेदू टोडै

नाथावत सोलंखी नाथै खेमराजोत का ३५.

रावत का रायमल खेमराजोत का ३६.

भोजाउत सोलंखी भोज का ३७.

खीयाउत सोलंखी खींवराज का ३८.

हरराजोत सोलंखी हरराज का ३९.

वैरीसालोत सोलंखी वैरीसाल का ४०.

वाघाउत सोलंखी वाघ का ४१.

२०० डूंगरसी टोडै

गांगावत सोलंखी गंग भारमलोत का ४२.

वलरामोत सोलंखी वलराम का ४३ गुजरात में गया.

२०३ पृथीराज

कमावत सोलंखी कनक करमराजोत सादूल रामावत ४४.

नरहरदास का सोलंखी नरहरदास का ४५.

रुद्रका सोलंखी रुद्र का ४६.

विष्णु का सोलंखी विष्णु का ४७.

२०७ भगवानदास

जगन्नाथ वसी मुतासिल झलाय आवाद है यह पातसीं... भे।

माधोदास का सोलंखी माधोदास का ४८. ...रिया

दयालदास का सोलंखी दयालदास का ४९.

जगरूप का सोलंखी जगरूप का ५०.

हस्बजेल सोलंखियों की साखा प्रतिसाखा फिर पाई जाती है पेस्तर सोरूं में फिर दिखण में थे दिखण से एक साखा अनहलवाडे पाटण आई उसकी साखें ऊपर दर्ज हुई उनके अलावे हैं उन में कौन इनमें की हैं और कौनसी इनके अलावा हैं, पता लगाकर मौके पर दर्ज करना ॥

लहगा सोलंखी	मालावार किल्याणनगर में थे एक साखा अनहलवाडे पाटण में आई मुसलमान हुए मुसलमान राजवंस राय सहरा कुतबदीन नाम रक्खा.
सोलखी खालच पीथा सोझतिया डाहल वाला वांमग चोंडावत वोहला ढाइ	सोलंखियों की १६ साखा का एक कवत मारवाड़ में प्रचलित है उनमें की साखें ऊपर नहीं आई वो. (वहला) लं० २५ तोन है.
तुगर मालखांनी मालखांका ब्रिकू	मुसलमान होगया, टाटराजस्थान में लिखा.

पीरवुर राव लूणावाडा.

कलाचा इलाके जेसलमेर माल दोतारै गामा में.

राव का टोडै.

तान्तया.

अलमेचा.

खाररा मालवे में जावरै.

कुलमोर गुजरात में गया.

गोकलपाल दखण में, चहुवाण रईस ११४ पुस्त का रिस्तेदार.

मोचाला.

पवार अग्निवंस वसिष्ठ गोत्र यजुर्वेद माध्यन्दि साखा त्रिपरवर साखा ३५ सचियाय माता.

१६४ चन्द्रदत्त

महपावत महप, मंग, चन्द्रदत्तोत का १.

जालपाउत जालप मंग के बेटे का २.

धारवा धारव, वीरस, चन्द्रदत्तोत का ३.

भामा भामा वीरस के वेटे का ४.

१६५ उदियादत्त

भायल भायल पील धवल, उदियादत्तोत का ५.

डोड डोड पीलधवलोत का ६.

सांखला संखल महप धवल उदियादत्तोत का ७ इनमें खांप.

रूणेचा गाम रूण इलाके मारवाड़ में है उसमें काविज रहे वो.

जांगलवा जांगलू इलाके बीकानेर में है उसमें राज था वो.

सोढा सोढ सूमर के बेटे सीहधवल के पोते उदियादत्त के पडपोते का ८ इनमें खांप.

सूमरा
उमरा } मुसलमान हुए.
सूमायचा

उमट उमरसींह धवलोत का ९.

डछिवय (छिले) दरभी वीर धवलोत का १०.

१६६ रणधवल

हुण हुण का ११.

सांवत सांवत हमीरोत का १२.

वरड (वारड) वरड हमीरोत का १३.

सुजान का सुजान हमीरोत का १४.

कुतज कुंतल हमीरोत का १५.

सरवडिया सर्व डपातलोत का १६.

जोरवा जोरवा पातलोत का १७.

नल नल पातलोत का १८.

मदन मदन पातलोत का १६, कवता में मयन लिखा है यह दोनों नाम कामदेव के हैं.

पोसवा पोसव पातलोत का २०.

खहर खहर पातलोत का २१.

कालमा कालम पातलोत का २२, साचोर में राज था इससे (साचोरा) भी कहते हैं.

गूंगा गुग पातलोत का २३.

१६७ सहदेव

हुरड हुरड करमन के बेटे का २४.

सालाउत साला का २५.

रवडिया रवड का २६.

कव्वा कव्व का २७.

थलवार थलपती का २८.

गहलडिया गहलड का २६.

धंध धंधू का ३०.

१६८ अमरेस

सिघन सिघन का ३१, कवता में सिघण लिखा है.

कुरड कुरड का ३२.

कंकन कंकन का ३३.

उल्लंगा उलंघ का ३४.

वावला वालल का ३५.

२०२ कल्याणराय

राय नराउत रायनरायन के ३६ मालवै, आगर सहर.

असोक बड़ा था जिसकी नसल — वीजोल्या में महाराणा संग्रामसिंघजी के वख़त से वकाया राजपूताना में महपावत लिखे हैं, मगर अव्वल वाली महपावत सांखा नहीं है महाराणा कूंभाजी के वखत में राव महपाजी हुए हैं उनके नाम से धोका खाया है.

जगदेव रिणधवल १६६ का भाई

जगदेव की नसल — इयां खतम है मगर वाजे भाट गुजरात में बतलाते हैं.
तेरवां ढोली इहां है,
जगनेर ठिकाणां जिला आगरा में है १४०० गांव के जमीदार इनके भाई हैं वो जगदेव के खानदान में होने का दावा रखते हैं यह लोग चहुवाण से रिस्तेदारी करते हैं पडिहार से भाईवंदी रखते हैं भोगीसिंघ की पाटी गंगापार ३०० गाम के जमीदार जगनेर के खानदान से है जागा जगनेर की जार्ती है.

हस्बजेल पंवार की साखें ऊपर लिखी उनके अलावे पाई जाती हैं.

वीलह साखा	पंवार की ३५ साखा में प्रसिद्ध है आबू से पछम चन्द्रावती में राज था. टाटराजस्थान में लिखा है कि इनको (वहला) भी कहते हैं.

पंवार.

वलहार.

मोरी.

भोरा.

चावडा जोधपुर की किताब में.

वांधी आदुर	पंवार सांखला में.
खैरोवी जनग्री	पंवार सांखला में.
रेहार ढडा सरतिया हरिआर	मालवा में छोटे गिराससरदार.
खेजर सुगरा वरकोटा पूनी साम्पल भीवा कलपूसर कलमोह कोहिला पया	अकसर इन में से मुसलमान बाज आन सूव दर्यासिंध हैं.

कहोरिया
देवा
वरहर
जीपरा
पोसरा
धुनता
रिकमवा
तेका

चहुवाण — अगनीवंस आदि पुरस का अनहिल नाम, सामवेद, कोथमीसाखा, पंचप्रवर, वत्सगोत्र, आसापुरा देवा, कालिका साखा २४—विरदसंभरी.
वसिष्ठ गोत्र जोधपुर की किताब में, सामवेद, सोमवंस, माध्यान्दिनी साखा, वच्छगोत्र, पंचपरवर जनेऊ लकतंकारी निकास, चन्द्रभागा नदी, भृगुनिसान, अंबिका भवानी, वालनपुत्र, कालभैरव, आबू अचलेसर महादेव, बकाया राजपूताना में, कुलह गोत्र, गोभिल (लिम) सूत्र, आप्रवान, यामदग्नि, चवन, भार्गव, ओरव, पांचप्रवर, श्रीकृष्ण कुलदवता, मयूर पक्षी, वामसिखा, वामपाद, ध्वजरक्षक गरुड़, आयुध खडग, कहीं ऐसा लिखा है.

८५ **महानंद राजा का वंस**—उत्तराधिकारी का नाम धरमधन उरफ़ विष्णुदास.
संभरीक.
संभरवार.
संभर.

११० साथकराज के बेटे हनूमान का वंस पूरब

में है उनमें हीराधर का वेजलदेव का पूरविया चहुवाण है इनमें ३१ भेद

इनमें से वेदला, कोठारिया, पारसोली के सरदार उदैपुर के उमरावों में हैं पूरविया चहुवाण कहलाते हैं टाटराजस्थान में पृथीराजकी नसल लिखी.

आल १.
वीले २.
सागर ३.
आसावर ४.
तोगी ५.
पप्पाडिया ६.
आंमर ७.
आसिमेरी ८.
भाकर ९.
सावरिया १०.
हैइंग ११.
जड़ड़ेचक १२.
हरिया १३.
नमसवाल १४.

झंगसिक १५.

समराचक १६.

समरूप १७.

सुकराना १८.

भावड १९.

गोगसेन २०.

सांभवाल २१.

तोसीना २२.

गुरावा २३.

धांमनेचा २४.

मारू २५.

मंत्री २६.

भंवर २७.

हब्वासी २८.

दानिक २९.

कचेला ३०.

वगाड ३१.

११० मांणकराज के बेटे सुग्रीव का वंस हस्बजेल

१३४ मांणकराज दूसरा सांभर १२ साखा पुरविया को १

माद्रेचा----- माद्रेचा लालसिंघ का २ मद्र देस से यह नाम हुआ, देसूरी में राज था.

धुन्धेट (धुंधेडिया) धुन्धेट हरीसिघोंत का ३. { धंधेर बूंदेलखंड में है उनका व्यवहार बूंदलों से है

पंजावी घनसादूल के बेटों के ४ पंजाव देस से यह नाम हुआ.

टंक टंक सादूल के बेटे का ५.

भदोरिया (भदोडिया) पूरणराज का ६ भदावर में राज होने से

यह नाम हुआ.

सोवर्णगिरा (सोनगिरा) मोकतिकराज का ७ — सोवरणगिरी जालोर के पहाड़ का नाम है वहां राज रहने से यह नाम हुआ.

हापड हापड़ का नडदे के भाई का. सोनगरा की साखा

निरवांण निरवांण का ८.

देवडा देवराट निरवांण के बेटे का ९ इनमें खांपें रयासत सीरोही.

तेज़ावत.

डूंगरोत.

मदार.

पाडिया क्रिसनराज का १० पराड्य देस राज करने से जाती का नाम हुआ.

गुजराती लसुनराज का ११ गुजरात देस राज करने से.

बगसारिया प्रवालराज का १२ वगसर देस राज करने से.

१३५ राजा सोकम

खीची — अनड उरफ़ खीची का १३ अनड का कुहतसाली में खीच खिलाने से खीची नाम हुआ जिसके खीची कहलाये रयासत राघोगढ़.

सारंगोत साखा मेवाड़ में. खीची की साखा

१३६ रामचन्द्र

वालेसा वालेस १ वालेस नाम नगर वसाया इनमें २ भेद हैं.

वालाराजपूत.

काठी—वालाजी का खानदान काठियों में सरदार है वालों का चोटीला ठिकाणा है खीवराज वालेछा इस साखा में हुआ.

वंगडिया वंगदेव का २.

गोलवाल गोलपाल का ३.

पुठवाल पुष्टपाल का ४.

मलयचा मलयराज का ५.

चाहोडा चाहडदेव का ६.

हरीण हरीणदेव का ७.

माल्हणा मलहण का ८. { ५ सतावदी पहिले कोई नहीं जानता बूंदी का राजा व्याहा था भटकै वाकव करने पर त्याग दी.

मुकलारा मोत्कलवारो ६.

चक्रडाणा चक्रडाणा का १०.

सूवटा सूवट (सूकट) का ११.

१३९ भोगादत्त

चित्रक रा चहुवाण (चीता) चित्रक उरफ चीता का १.

१४१ रूद्रदत्त

भैरव भैरव का १.

त्र्यरव त्र्यरव का २.

अभ्रवा अभ्रवा ३.

व्याघ्रोरा व्याघ्रोरा ४.

व्रन्धेचा व्रधनदेव का ५.

सरखेल सरखेल का ६, इहांतक ३१.

१४२ इसर

मोरेचा मयुरधज का १ इनमें भेद २.

पव्वया परवत मयुरध जोत का.

साचोरा तुरुणपाल उरफ तुष्टपाल साचोर के राजा का | मोरेचाकीसाखा

वहोला वहुलक का २.

गजयला उरफ गयला गजलदेव का ३.

तिलवाडा उरफ तिलवाडिया तिलवाट का ४.

चीवा चीवक का ५.

सरपटा सरपट का ६ सेफटा.

चित्रावा चित्रराज का ७ इसके ७ बेटों से ७ भेद.

चंडालिका चंडालीक का.

चाहोडा (चाहड) चाहुड का.

वडेरा वटराज का.

मोरिया (मोरी) मोरिक का — वंसभास्कर में चित्रांगद मोरी वांनी किला चितोड इस कौम का लिखा है और टीकाकारने मोरी साखा अलग है उसमें चित्रांगद होना लिखा है

रेवडा रेवत का.

चन्दना (चंदण) चन्दन का.

वंकटा वंकट का.

१४३ उमादत्त

वत्सला वत्सलराज का,

पावचा प्रवाचक का.

भूमरिया भूम्मर का.

१४४ छतर

तुलसीरच्छण तुलसीरचण का.

सलावत सल का.

१४५ सोमेसर

(भरत १४६ के वंस में चंद्रगुप्त १५० के पहले बेटे परताप की नसल)

डिडूडुरिक चहुवांण — पृथीराज उरफ डिडूडुर १६६ का इस खानदान में दिलीसुर पृथीराज १७७ हुए जिनसे हरवज़ेल साखा.

पृथीराज १७७ का वंस नीमरांणे.

कृक्ष, पृथीराज १७७ का चचा का वंस मैनपुरी- इनका एक बेटा ईसरदास मुसलमान हुआ.

चाहडदेव { पृथीराज १७७ का छोटाभाई के विजल देवराज हुआ जिसके बेटे लखनसी के ७ बेटों से ७ वंस विख्यात हुए नीमराणा टाटराजस्थान में लिखा. ढेडरियाकीसाखाबसरै

गाडण चारण पृथीराज १७७ के बेटे का, कृष्णा

चहुवांण मीणा { पृथीराज १७७ का बेटा जोधा मीणी के पेट से था जिसके किसी जगै पृथीराज के भतीजे लाखणसी के लिखे हैं, मेर कहलाते हैं इनमें कई साखा हैं कई हिन्दू कई मुसलमान हैं. ढेडरियाकीसाखा बसरैगाडण

(चन्द्रगुप्त १५० की दूसरी साखा अरत्न की)

चारंगे चतरंग १५२ का.

सोतिया चवांण मोकतिक वरसीह १७५ के बेटे गोविंद का,

मांणक मांणकराज वरसीह के बेटे गोविंद का.

(उरथ १४६ की नसल समथली अनरवद्द दखण)

हाडा चक्रपांणी १४७ की नसल में असतिपाल १५५ का.

अवरा चहुवाण अवरदेव का,

गोठवाल गोष्टपाल का,

जांम जांम का,

वडडा वकुट का.

१५५ भानूराज उरफ असतिपाल राजा आसेर गढ़ का हाडा

१७८ वंगदेव

घुग्घलोत घुग्घल का १,

मोहणोत मोहन का २.

१८० देवाजी हाडा बंबावदे

हत्थावत हत्थ उरफ हप का ३.

हलूपोता हलू हरपालोत का ४ इनमें ५ भेद.

चचावत

कुंभावत.

वामवत.

भोजवत.

नयनवत.

लोहराज हलू का छोटा भाई का वंस गुजरात में बतलाते हैं.

१८१ समरसिंह बूंदी

हरपाल पोता (हरपालोत) हरपाल का ५.

जैतावत जैतसींह का ६ इनमें १८५ खाधिल्या से खांधिलोत कहाये.

खिजूरी का डूंगरसिंघ का ७ खिजूरी गांव से ऐसा नाम पाया.

१८२ नरपाल उरफ नपप बूंदी

नवरंग पोते नवरंग का ८.

थिरराज पोता (थिरराजोत) थिरराज का ९.

१८३ हमीर बूंदी

लालावत लालसिंघ के १० इनमें २ भेद बेटों से हुए.

जैतावत जैतसिंघ के.

नव ब्रह्म के नव ब्रह्म के.

१८४ वरसिंघ बूंदी

जावदू जावदू का ११ इनमें २ भेद पोतों से हुए.

सांवत का सांवत सारण का बेटा जावदू का पोता.

मेवावत मेव, सेव का बेटा जावदू का पोता.

नीवावत नीमदेव का १२.

१८५ वैरीसाल बूंदी

अखावत अखैराज का १३.

चुंडावत चुंड का १४.

उदावत उदै का १५.

स्याम उरफ केसवदास को मांडवैवालों ने पकड़ कर मुसलमान किया

१८६ सुभांडदेव के बेटे नरवद का नरवद पोता

भीमोत भीम नरवदोत का १६.

हमीर का हमीर पूरणोत नरवद का पोता का १७ { पेश्तर पूरणोत कहलाते थे हमीर के नाम से हमीर के कहलाये.

मोकलोत मोकल नरवदोत का १८ वैरीसाल के नाम से वैरावत कहाये

{ अखैपोता अखय, अरजनोत नरवद के पोता के बेटा दयाल, उदय थसराज का १६.

राम का राम, अरजनोत नरवद के पोता का २०.

जसाहाडा कांदल अरजनोत के वंस का, टाटराजस्थान में लिखे.

१८७ नारायणदास बूंदी

सुरतांण पोता सुरताणसिंघ सुरजमलोत नरायणदास के पोते का २१.

१९० सुरजन अरजनोत नरवद सुभांडदेवोत का बूंदी

दूदावत दुरजनसाल का २२.

रायमलोत रायमल का २३.

१९१ भोज बूंदी

हरदाउत हृदे नारायणजी का २४.

भोज पोता केसोदास का २५.

१८८२ रतनसी बूंदी

माधाणी माधवसिंघ का २६ कोटे का राजवंस.

मोहनसिंघोत पलायते आपजी.

किसोरसिंघोत अणते.

हरीजी का हरीसिंघ का २७.

जगन्नाथ पोता जगन्नाथ का २८.

कंवर गोपीनाथ रतनसिंघोत बूंदी

इंद्रसालोत इंद्रसाल का २९ इंद्रगढ़ आबाद किया माराजा.

वैरीसालोत वैरीसाल का ३०.

मोहकमसिंहोत मोहकमसिंघ का ३१.

माहेसिंहोत माहसिंघ का ३२.

१८८७ बुधसिंघ बूंदी

दीपसिंघोत दीपसिंघ का.

१८८८ उमेदसिंघ बूंदी

बहादरसिंहोत बहादरसिंघ का.

सिरदारसिंहोत सरदारसिंघ का.

हस्बजैल चहुवांण की साखा फिर है पता लगाकर मौके पर दर्ज कीजावें

चवाण.

मालण चवाण मालण, सुबाहू, अनलोत का टाटराजस्थान में माणकराव से पहिले लिखा.

पचवाना चौहान लालसोट में.

वाघोड सोनगरों में से जालोर लूटी जब वीरमदे का २ भतीजा जेसलमेर आये उनके.

छावडा छावडा में न्यानगज से हुए थे मगर अब छावडा बनिया चवाण से हुए इतना पता है.

वालोत.

आदरेचा.

मनभावा.

चाहिल — राजपूत चाहल जाट गोगामेडी का पूजारी (चाहहु वो चहुवांणरे) मोहलों की वंसावली में यह फिकरा है.

मोहल मोहल नामी चहुवांण पूरव से आया उसके इनमें ४ घराणें.

रांणेरा.

राजेरा.

धीरेरा.

किरतेरा.

नाडोला जिसका राज नाडोल में था.

वागडेचा.

वालिया जिसका राज रायपुर में था.

जोजा जिसका राज जोनावर में था.

सोढल (साढेल)
साइदरा
रतपाल
सुरतांणचा
सेजपाल
वियोल भपा
— नातरायतों में.

कायमखानी
सखानी
कुरुखानी
लवानी
वेदवानी
— मुसलमान होगये टाटराजस्थान में लिखा.

सूरा
सगरायचा
भूरायचा
त्रिलायचा
तसीरा
चचेरा
रोसपा
चंदू
निकुम्प
भावर
वांकेता
मलानी नेपाल
गिरा मंडला पाल अहीर

} बकाया राजपूताना में.

झालावाड

मलानी, मालिया } बकाया राजपूताना में लिखा है मोहल, मालन, मलानी, मालिय, कौम मोहलमालीकी औलाद में थे माली का दारू-लहकूमत मुलतान में था जो असल में मोहलथान था.

कांपलिया.

राजपूतों के हस्बजेल वंसो का पता नहीं लगा पता लगा कर मौके पर दर्ज करना

(टाटराजस्थान में ३६ कौम के राजपूत लिखे उनमें से वंसों का पता लगाओ मौके पर लिखा जाकर बाकी रहे वो)

जितवंस मुसलमान होगया जादवों से रिसता था तक्कों में से थे जाट होगये हिंदू प्राक्रमी थे सूर्यवंस धर होमजिग से पवित्र हुए थे कभी जातीचुत हुए हैं कोई राजपूत रिस्तेदारी

नहीं करता टाटनाम में अनारिय लिखे.

तक्षक कंवरपालचरित्र में सरप जाती लिखी स्यायद ये होवे—टाटराजस्थान में अनारिय लिखे.

सोरकुल चंद्रवंस, सूरजवंस से अलहदा मेवाड और सोलंखियों के सगे थे, सोराष्ट देश से मेवाड में गये मूलराज के पिता जयसिंघ को आखरी राजा भोजराज की बेटी व्याही थी मूलराज ने अनहलवाडा नाना का पाट पाया, सोरवंसी राजा भीसम से राठोड अजासिंहावत सोराष्ट जीता.

हुन साकदीप से आय सोराष्ट में प्रतिष्ठा पाई, उतरी चीनसे निकाले गये, टाटराजस्थान में अनारिय लिखे, टाटराजस्थान में पंवार में हुन राजा में नालसथान [illegible] हुनपती, अगतसी लिखा. पंवार में ११ वीं खांप हुन [illegible]सका गोर करना.

मकवाना साकदीप से सोराष्ट देशमें आये, जोधपुर की किताब में पंवार की साखा लिखी मारीच गोत्र, वांण माता, धरम विसनव, सिवका इष्ट.

काठी साकदीप से आकर सोराष्ट में प्रतिष्ठा पाई काठीवाड इनके नाम से है जरमन की आंरभक जाती में से थी टाटराजस्थान में अनारिय लिखा, वाला सूर्यवंस में से निकलने का दावा करते हैं चोटी ले का रइस बाला है मेरे दरयाफ़त करणे से मालूम हुआ जिसका खुलास यह है काठियों की उतपती बतलाई उनमें पढ गरवगैरह २४ जातथी राणाजी का भाई वालाजी काठी में मिला उसके पेस्तर के बेठे वालाराजपूत रहे मूलीबाई काठियांणी के पेट के काठी रहे उनमें खाचरवाला, खुमाण ४ जात हैं जो जमीन के मालक हैं पीछे से राजपूत धांधल वगैरे काठियों में सामिल हुए वो भी बेज़मीन हैं और वंसभास्कर में वालाजी का वालीला चहुवाण लिखे हैं इसका दरयाफ़्त करना.

वल्ल ठठै मुलतान के रायभाट ऐसा कहते हैं सिन्धू किनारे रहते थे वो अपने को सूर्यकुल कहते हैं वल्ला तथा वपागोत्रपती सोराष्ट्र देश में आये जब वलखत्र नाम पड़ा छोटीला सेवलखुमांण की मदत आये.

झाला मकवाना चन्द्रवंस, सूरजवंस, अग्नीवंस में वृत्तांत नहीं मिलता भारत के उत्तरदेस से सोरठ देस में आये महाराणा प्रतापसिंघजी की लड़ाइयों में प्रतिष्ठा पाई, सब से पहिले चितोडपर मुसलमानों की चढ़ाई हुई जब झाले चीतोड मदत आये थे, हरपाल मकवाणे पाटडी के मालक के सीड़ी वगैरे ३ बेटे हुए उनकी औलाद झाला कहलाई, बींकानेर, द्रागदडो, हलवद, झालरापाटण रयासतें, झालावाड मुल्क इस कौम के नाम से है.

जेठ्वा (जेतव) जितव, कोमारी, प्राचीनकाल में गुमरी नगर में राज था, हनूमानजी की औलाद पूछडिया राणा कहलाते हैं दुसमनों के मुकाबले में वहां से नीचा देखकर प्राचीनकाल में सोरठ (सूरत) में प्रतिष्ठा पाई राजपूत माने जाते रहे मगर किसी राजकुल के साथ संबंध होने का पता नहीं पाया अनंगपाल तंवर पीछी दिलीली उसकी बेटी व्याही बतलाते हैं मगर यह बात कपोलकल्पित पाई जातीहै.

सिलार (सुलार) सोराष्ट्र देश में प्रसिधी थी मगर अब कुछ बोध वणियों के सिवाय कोई नहीं है.

डाभी (डावी) सोराष्ट में पेस्तर प्रसिध थे कोई भट यदुकुल की साखा बतलाता है मगर पता नहीं है वंसभास्कर में पंवार का १० वां भेद ऐसे नाम का है डाभियों साखा डाभी, करड.

दर (दोदा) वंसपत्रकावों में नाम लिखा है चरित्र का कोई पता नहीं मिलता है मगर एक दफा महाराजा पृथीराज चहुवाण ने इन पर फतै पाकर अपने भाग्य को धन्य माना था, महाराजा अपराजित के भाई नंदकंवार गहलोत भीमसेन दोदासे देवगढ़ फतै किया दखण में.

गेरवाल पेस्तर कासी में रहते राजपूतों जसे वीर थे इसी कारण से छतीस कुलों में आसण पाया राजपूतों ने इनके साथ विहा सादी नहीं किया बूंदेला इसका एक साखाकुल है जो अब प्रसिधहै, वंसभास्कर जिल्द २ पाने ११३४ में लिखा है कि जयराम चहुवाण राजा ११६ गोपाल पर का सात लग हिरवाल की बेटी व्याही इसकी साखा गेरवाल चंदेला, बूंदेला.

बूंदेला इसवी १२ वीं सताब्दी में मान नामा वीर हुआ जब से इस कौम का आरम्भ हुआ मोहवे चंदेल से पृथीराज की लड़ाई से मानवीर को फतै आसान हुई बूंदेलखंड में मधुकर साह ने उडछे का राज बांधा मुगल बादसाह अकबर, साहजहां, औरंगजेब के बखत में वीरता प्रकास की बूंदेलखंड इन के नाम से विख्यात है वूंदी की तवारीक में लिखा है कि राजा वरसंगदेव बूंदेला ने रावराजा रतनसिंघ के बेटे की सगाई करनी चाही जब कोई कुजोग से कुलसंकर बताकर इनकार किया, खोरताजदेव गहरवार के ७ वीं पुस्त में जसोदा ने विंधवासनी में जिग कर अपनी औलाद को बूंदेला का लकब दिया.

बूंदेलखंड मोहनी मोहवा कालिंजर.

सेंगर जमना किनारे जगमोहनपुर में प्रतिष्ठावान थे राजस्थान के राजकुलों में कभी प्रतिष्ठा प्रसिधी नहीं हुई वंसभास्कर जिल्द २ पाने ११३५ में लिखा सूरजवंस बंधूनगर के राजा पर-

ताप सेंगर की बेटी राजा गोवरधन चहुवाण को पोतो गिरधर १२२ परणयो, फिर सोमदत्त चहुवाण १२७ परणयो.

सिकरवाल चंमल किनारे जदुवती के करीब सीकरवार नाम सहर आवाद किया जो इलाके गवालियर में है राजस्थान के राजकुलों में कभी प्रसिधी नहीं पाई टिप्पणी में राजपूत नहीं है लिखा

वाइस (वेस) छत्तीस राजकुलों में स्थान पाया पृथीराज रायसा, कंवरपाल चरित्र में नाम नहीं पाया जाता इससे प्रसिधीपाणा नहीं पाया जाता इस बखत इस की असंख्य साखा हैं, सूरजवंस की एक साखा मालूम होती है.

दहिया पुराना राजकुल से है सिन्धू सतजल के संगम के करीब रहते, जोधपुर में जातों की किताब छपी उसमें लिखा है कि इन को कोई कोई लोग राठोड की १३॥ साखों में से आधी साखा समझते हैं, भाट लोग कहते हैं विधवा राजवूताणी को साधु की दुवा से बिलोवणे में बेटा मिल्यो जिससे दहिया नाम हुआ राठोड नहीं है जात अलहदा है मगर एक राठोड राजा का वैर बेटे नहीं लासकते थे वो इसको आगे कर२ लाया और वापसी के वखत उनकी बहिन ने अवल इसके तिलक किया जबसे तिलकभाई मानते हैं.

दहिया में गोरा दहिया, काला दहिया २ भेद हैं, रणवा खाप का दहिया पूरव से आया जालोर के सोनगरे राजा की बेटी से नाता किया नाता होवे वो काला दहिया कहावें.

निकुम्प प्रसिध थे मांडलगढ़ में अमला था बकाया राजपूताना में चहुवांण लिखा है अलवर का किला निकुम्पों का बनाया कहते हैं.

राजपाली (राजपालीक) या सुध नाम से पुकारे कोई कोई कहता है कि सक जाती से उत्पन हुए.

दाहिर सिन्धू देश में थे सब से पहिले मुसलमानों की चीतोड

पर चढाई हुई उस बखत राजा लोग चीतोड़ आये उनमें देवल के राजा दाहिर का नाम है.

दाहिमा प्रसिध राजकुल हुआ पृथीराज के बखत बियाने में अमल था पृथीराज चामुंडराय की बहिन ब्याहे थे कैमास, पुंडीर, चामुंडराय नामी सामंत थे अफसर थे.

कागगर नदी की लड़ाई में काम आये जब से नाम बाकी है सोलंखियों के भी सगा थे गैर कौमों में अबतक पाये जाते हैं.

मोरी पंवारवंस में मोरी साखा है उक्त साखा कुल का प्रधान पुरुष तच्चक कुल में उत्पन हुआ था सालीवाहन तच्चक में था तच्चक गुजरात में मुसलमान हुए इतिहास में लिखा है कि सिसुनागवंस के नदीवरधन के महानंद हुआ उससे नंदवंस चला नंद सूद्र था नंदवंस नष्ट हुआ जब चंद्रगुप्त पाट बैठा यह मोरी का बेटा या मोरियों का आदिपुरुष कोई के मत से चंद्रगुप्त नंद का बेटा था कोई के मत से महानंद के सुनंदा नामक असत्री से नंद था मुरा नामक सूद्राणी के पेट से मोरिया हुआ मोरिय के चंद्रगुप्त हुआ जो पटने की गदी बैठा वंसभास्कर में चित्रांगद मोरी चीतोड़ का मालिक हुआ उसको मोरीणा चहुवाण लिखा वंसभास्कर का टीकाकार कइयों के मत से मोरीवंस अलग मानते हैं मांनमोरी पंवार सूरजवंस टाट साहब लिखे टाटराजस्थान का अनुवादक लिखता है मोरियों को तच्चकवंसी मानना भूल है बोध जैन लेखकों ने सूरजवंसी लिखा है.

(राजपूत कौम के नाम ऊपर लिखे उनके अलावे पाये जाते हैं वो)

जावलो, को दिखण
पारणो, को कछ } टाटराजस्थान में वरदाई ग्रंथ के हवाले

कीहरो, को काठियावाड | से लिखा है कि राजाराम पंवार ने रा-
रायपुहारो, को सिंधू देस | जपूतों को देस देकर सांवंत बणाये.

पुंडीर.

हाला { जाडेचों में से है हालार जिला के नाम से हाला नाम पड़ा ऐसा सुनते हैं यह ठीक है या क्या.

चंदेल राठोडों से अलग है वो.

आचंदणा (आचंद).

काछेला.

राकसिया.

चूडासमा.

वागडी पूरविया चहुवांणा मेवगाड हैं उनमें के हैं क्या.

वावरिया.

वाराहा टाटसाहब मुसलमान होगया लिखे.

जांगडकुल { चाचिकों का सगा जेलपुर गाँव वंसभास्कर में लिखा जांगड नाई भी हैं चाहे इस जात के हो चाहे इस कौम की वसी के.

खरल { सांखलों के सगे, जांगलू का कंवर कंवरसी भारमली व्याहा था भारमली का भंवरा जोइयों के वतन में मसूर है, खरल वाढोली भी हैं.

मडूडानी.

मेहर.

मुलतानी.

चाच.

वछकुल कालरोध में.

कंठीर

गाजीकुल वल्होरनेर

चाचिक (चोहत्थ) वंसभास्कर में लिखे.

वारर.

दहर (दहड) वंसभास्कर में लिखे.

खंभेडा.

तवडाकिया.

वल्लाल — १० सदी ईसवी के अंत में मेसूर में थे करणाटक, दखणी, चोलपछमी का राज कबजे किया सन् १३१० ईसवी में मुसलमानों ने उनका नास किया.

कोरी मुसलमान सिपाइयों में है.

वोडाणा गाडा लैलवारो, घांच्यों टाक मालियों में.

सणावा.

सैलोत.

मैपांणी.

राणावा साचोर के गाम सूराचंद में राज था काला दहिय की खांप रणावातोन है.

टावरी राजपूत और महेसरी वणिया दोनों हैं.

सोला सिनली के टाटराजस्थान जिल्द २ सफै १५.

वलभवंसी अखो के साथ महाराज अजीतसिंघजी ने पहाड़ों में मुसलमानों पर धावा किया.

मंडला सरबुलंद फतै किया.

गोरिल जाती.

लुदर — लुदरव के राजा भानू की बेटी देवराज भाटी व्याही टाटराजस्थान में लिखा है कि सायद पंवार हो पंवार धरणीवाराह के ९ कोट तकसीम करण के छपे कवत में भांणभू लिखा है वो है क्या.

चन टाटराजस्थान में खतम होना लिखा.

वांभेरचा
हलावटा
गोदा
पांचल
वेगडा
मालण
वेरया
पांचपाल
हूवड
भूया
पांणीवल
मांचोला
पराडिया
कालम
कुंकण
वूआ
राडवडा
चुरचा
मढला
सीमाल
कावाडिया
सेमाल
राजग
वेल्हड
धांधू
पहे
सीलोरा

} नातरायत राजपूतों में.

मूलेचा	
आभरा	
धांधिया	
भाइया पूनू	तवर मुसलमान सिपाइयों में.
सावद गजू	सोढ़ा मुसलमान सिपाइयों में.
मोहर	भाटियों में.
सूमरा	मुसलमान सिपाइयों में.
राजड	मुसलमान सिपाइयों में मोहर, सूमरा का सगा.
कुरु दुजाल खीमार सूर्य ढीमर डीमर मोरटच सोरडी हेम मोरट सोम	खंडलवाल बनियों में.
जावडा गेलडा मूण चांडिया धूकड	गेलडिया होवे तो पंवार में होसकता है. वालादिया राजपूत हैं उनमें यह नाम अणसहदे हैं.

सुख सेजा भडभूजा में.

जैपाल नाइ राजपूतों से हुए उनमें.

जिदराणा
लाडावत
सरुवा
} मुसलमान लुहारों में.

मोउआ खेरादियों में.

नेणवा
हारडा
} लखारों में

मोठसरा
कवाई
सनपाल
भोजाणी
कपूरिया
} ठठारों में.

संखलेचा दरजियों में.

कालेरी घोसियों में.

देवत वारियों में.

चावा
चता
बागडेचा
अभैराजोत
साह लोत
सांभरिया
} मेहरों में.

सारण
सांगाणी
} वागडियों में.

काती

घरवाल

वांसिया खारडिया डांमर	गिरासियों में.
बुस लाहोर में राज था अश्वरिया सिवपत कुल्हर मालून ओहिल	चीतोड मानमोरी की मदत आया टाटनामा जिल्द १ यां १२४.
जिरके सेतबंदर से मछवाना मांगरोल से जोडिया जैतगढ़ से खेड तारागढ़ से चंदाना लोदरगढ़ दुसाना जेनगढ़ वारेगोत पलीसे खेखर जिरगा से	चीतोड खुमाण की मदत आया टाटनामा जिल्द १ यां १२५ चंदाणा महाराणा हमीर की ननसाल.
गयराजकुल अन्दलूस का राजा हारसकुल गोल कुंड पारद अनारिय	टाट नामा से.

वालावत, वांकडोत, कोटा का फोजदार जालिमसिंघ झाला का मामा.

सौंदगी काठी और मालनी का वंस,

कौरव धाट, थल में.

गेटी

यूली

मेसूरी

मुलिया हांभर वरफा काग चोयल सांज परा लेचटिया	राजपूत सीरवियों में.
भूभडया चांवाडिया आकलेचा सेणचा मेगडावत	सीरवियों में.

मरु जांगड भाटों में.

जाठीवाल मारठी	हिन्दू तेलियों में.

वगाड पीजारां में.

वालण खीला विजमला रामहिया चांदगा मांणकरा	मोतेसरा में. मांणक राजा का भांनजा चारण को दान में दिया उसका नाम था सायद जात का झाला होगा.
माछलिया गांभेती हदावत	खारवालों में.

सिधलोरा कुंभारों में.

जालया
पेसानी
सोहागनी
चाहिरा
राना
सीसाला
वोटीला
गोतचीर
सालन
ओहिर
हूल
वाचक
वातर
केरच
कोतक
वुसा
वीरगोता

वकाया राजपूताना में फहरिस्त अकवाम राजपूत जिनकी साखा नहीं है.

नोरका
असवरया
सारजै
किरजाल
हरेरा
धनपालि
अगनिपाल
सकरंका
कुरपाला
ओहिल
पालकी

तुंदली का या हरपाल मोकर केसेर वरवेटा वावरया खान्त खेरा रावली मसानियां पलानीं वाहरया (वाहेरया) मालिया मान्तवाल कालचोरक मौकारा दावया खरवर भागडोल मौतदान कगेर करजेव चादलया पोकारा सलाला चंदक चापोतकट सिन्दू	बकाया राजपूताना में ५ फहरस्तों से फहरस्त बनाई इसमें का.

अनंगा
पाटक
दैदोता
किरतपाल
कोटपाल
कानि
कलचारक
कुरचरा

आभीर (अहीर) — बकाया राजपूताना में ५ फहरस्तों से फहरस्त बनाई उसमें है मगर ऐसी राजपूत कौम नहीं होगी न मालूम कैसे लिखा, टाटनामे में अजैपाल से पेस्तर चहुवांण की साखा लिखी.

मांनावत — मानावत राजपूतों से नोलखा पीसांगण के भायालिय किसनगढ़ के हालात में देखना.

मालोत जालोर में खतम हुए उनकी जमीन में तखतगढ़ आबाद हुआ.

लोहाना, कोरव वंसज रामचन्द्र के बेटे लव का.

भाटिया रामचन्द्र के बेटे कुस का.

वाजनया
वयाल
चमारया
वेवला
चम्पारा
दामोर वाघ
— डूंगरपुर में.

रायवेरीजी वोरदै का वांसवाड़े रांणी
मेरतयद
अदह (अध) रावल साहब का खानदान
कूम्हावत
— वांसवाड़े डूंगरपुर.

गोतम सूरजवंस गोतम उपटंक वंसभास्कर में.

सरवाहिया जादम	सरवहिया वंसभास्कर में सोलंखी लिख नेणसी मूहता की ख्यात में जादव लिखे भुजका जेसाद सूंदी ने जाडेचा सरवइया चूडासमा भाई बतलाया यह कैसा है सरवरये दोयतरां के हैं या क्या.